आज़ादी का अमृत महोत्सव

जनसंचार विभाग, झारखण्ड केंद्रीय विश्वविद्यालय

एवं

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

के संयुक्त तत्वावधान में "एक भारत श्रेष्ठ भारत" के तहत आयोजित

आत्मनिर्भर भारत

राष्ट्रीय शोध पत्र/आलेख/निबंध लेखन प्रतियोगिता

निःशुल्क सहभागिता

प्रथम पुरस्कार: रु.5100
द्वितीय पुरस्कार: रु.3100
तृतीय पुरस्कार: रु.2100

सांत्वना पुरस्कार : रु.500 (पांच प्रतिभागियों को)

मुख्य विषय:
- शिक्षा में स्वायत्तता
- मीडिया में स्वायत्तता

(किसी एक का चयन करें)

प्रतियोगिता में भाग लेने की योग्यता:

भारत में स्थित किसी भी पंजीकृत महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय के **स्नातक से लेकर शोध छात्र** तक भाग ले सकते हैं।

सहभागिता से संबन्धित नियमावली:

- रचनाएं विश्वसनीय स्रोत पर आधारित हो।
- उद्धरित सामग्रियों का संदर्भ अवश्य दें।
- किसी भी स्थिति में 10 प्रतिशत से ज्यादा द्वितीयक सामग्री का प्रयोग न करें।
- रचनाओं की मौलिकता से संबंधित शपथ पत्र अवश्य प्रेषित करें।
- विद्यार्थी/शोधार्थी अपना व अपने संस्थान का विवरण (सम्पर्क सूत्र) सहित प्रेषित करें।
- रचनाओं के साथ संस्थान से जारी विद्यार्थी/शोधार्थी पहचान पत्र या संस्थान द्वारा जारी प्रमाण पत्र प्रेषित करें।

पंजीकरण की अंतिम तिथि: 20 अक्टूबर, 2021
रचनाएं जमा करने की अंतिम तिथि: 30 अक्टूबर, 2021
शब्द सीमा: 1500-2500 शब्द
भाषा: हिंदी और अंग्रेजी
फ़ॉन्ट: यूनिकोड/टाइम्स न्यू रोमन

सूचना:

- स्नातकोत्तर तक के विद्यार्थियों एवं एम.फिल., पीएच.डी. के शोधार्थियों हेतु अलग-अलग पुरस्कार दिया जायेगा।
- नियमों का पालन न करने पर प्रतिभागी की उम्मीदवारी रद्द कर दी जायेगी।
- परिणाम से संबंधित सभी अधिकार आयोजक के पास सुरक्षित है।
- आयोजक के पास प्रतियोगिता से जुड़े सभी नियमों में विस्तार देने, निरस्त करने या संशोधित करने का अधिकार होगा।
- विजेताओं की सूचना संबंधित प्रतिभागी को ईमेल से दी जायेगी।
- सभी प्रतिभागियों को ई प्रमाण पत्र दिया जायेगा।

पंजीकरण लिंक : https://docs.google.com/forms/d/1oWAcqAznSHHwFh7Pu6EZm3SoGJYmaFbkz4DGSLlovNU/edit

प्रतियोगिता की अवधारणा

किसी भी राष्ट्र के विकास में शिक्षा एवं संचार का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा राष्ट्र के विकास की नींव तैयार करता है तथा संचार विभिन्न विचारों को जनता के समक्ष प्रस्तुत कर जनमत का निर्माण करता है। भारत देश की एक विशिष्ट शिक्षा व्यवस्था रही है जिसे समय-समय पर बाह्य हस्तक्षेप के माध्यम से दूसरी संस्कृतियों के अनुकूल बनाने का प्रयास लगातार किया जाता रहा है। इन बाह्य हस्तक्षेपों ने शिक्षा की स्वायत्तता को लगभग खत्म कर दिया और संचार माध्यमों ने विदेशी शिक्षा नीति से प्रभावित शिक्षा व्यवस्था को जनता के समक्ष लोकप्रिय बनाकर उन्हें अपनाने को प्रेरित किया। समय के साथ विदेशों से प्रभावित शिक्षा नीतियों का नकारात्मक प्रभाव देश में स्पष्ट रूप से देखा जाने लगा। परिणामतः शिक्षा की गुणवत्ता और मीडिया की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिन्ह लग गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षा को स्वायत्तता देने की सकारात्मक पहल की है। अनुशासित विकास के लिए स्वायत्तता की नितांत आवश्यकता है। शिक्षा को हम जितना स्वायत्त बनायेंगे शिक्षा की गुणवत्ता में उतनी ज्यादा बढ़ोत्तरी होगी। आज जब शिक्षा स्वायत्तता की राह पर राष्ट्रीय नीति के साथ चलने को तैयार है तब हमें शिक्षा में स्वायत्ता के विभिन्न पहलुओं पर अपना विचार व्यक्त करना चाहिए। विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों का भविष्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से तय होगा। अतः उनके विचारों को जानना काफी महत्वपूर्ण है। इसके लिए शिक्षा में स्वायत्तता के विभिन्न पहलुओं पर रचनाओं को आमंत्रित कर हम उनके विचारों को जान सकते हैं। विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति को और भी प्रभावशाली बनाने में सहायक होगा।

हम सभी किसी मुद्दें पर अपने विचार प्राप्त सूचनाओं के आधार पर बनाने हैं तथा सूचनाओं की प्राप्ति अब आधुनिक मीडिया के माध्यम से सर्वाधिक होने लगी है। अतः मीडिया का वास्तविक अर्थों में स्वायत्त होना अनिवार्य है। ऐसा न होने पर सकारात्मक नीतियों के प्रति भी जनता में भ्रम उत्पन्न हो सकता है। मीडिया पर विभिन्न राजनीतिक और आर्थिक समूहों का दबाव मीडिया की कार्यशैली पर प्रभाव डालता है। जब मीडिया वास्तविक अर्थों में स्वायत्त होगा तब सूचनाएं निष्पक्ष रूप से जनता तक पहुँच सकेगी। परिणामस्वरूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति के साथ-साथ अन्य सकारात्मक नीतियों के प्रति निष्पक्ष भाव से जनमत राष्ट्रहित में निर्मित हो सकेगा। इन अर्थों में मीडिया की स्वायत्तता पर विचारों को जानना प्रासंगिक है।

विगत वर्ष में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के शोध प्रकल्प के माध्यम से अखिल भारतीय शोध आलेख प्रतियोगिता सम्पन्न कराई गई थी। प्रतियोगिता में देश के 26 राज्यों से कुल 2168 पंजीकरण प्राप्त हुये तथा पंजीकरण के उपरांत 25 राज्यों से 1278 प्रतिभागियों के शोध आलेख प्राप्त हुये। प्राप्त 1278 आलेखों में से 1128 शोध आलेखों को प्रतियोगिता के नियमावली के तहत मूल्यांकन हेतु उपयुक्त पाया गया। पुरस्कार हेतु आलेखों का मूल्यांकन करने की समिति के अध्यक्ष प्रो वी के मल्होत्रा जी थे। मूल्यांकन समिति के द्वारा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय के अतिरिक्त 7 अन्य शोध पत्रों को भी सांत्वना पुरस्कार के योग्य माना गया। अंतिम निर्णय के रूप में 10 शोध आलेखों का चयन पुरस्कार हेतु किया गया।

मुख्य विषय के आलावा निम्नलिखित उप विषयों पर भी रचनाएं प्रेषित किये जा सकते हैं:
पाठ्यक्रम निर्माण में स्वायत्तता, कक्षा शिक्षण में स्वायत्तता, ऑनलाइन शिक्षा और स्वायत्तता, शिक्षकों की स्वायत्तता, शिक्षण संस्थानों की आर्थिक स्वायत्तता, परीक्षा मूल्यांकन में स्वायत्तता, पाठ्यक्रम विषय चयन और मूल्यांकन, स्वायत्तता तथा पारदर्शिता, स्वायत्तता तथा नियमन, स्वायत्तता तथा उत्तरदायित्व, राष्ट्रीय शिक्षा नीति और शोध की स्वायत्तता, प्रतियोगिता परीक्षा एवं स्वायत्तता, मीडिया और आर्थिक स्वायत्तता, मीडियाकर्मियों की स्वायत्तता, मीडिया शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति, मीडिया रिपोर्टिंग और स्वायत्तता, विज्ञापन एवं स्वायत्तता, मीडिया प्रबंधन एवं स्वायत्तता, गुणवत्तापूर्ण लेखन में स्वायत्तता का महत्त्व।
उपरोक्त उप विषयों के अतिरिक्त मुख्य विषय से संबंधित अन्य विषयों पर भी रचनाएं आमंत्रित हैं।

पूछताछ के लिए संपर्क करें

श्री वैभव उपाध्याय
शोधार्थी, जनसंचार विभाग
महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
वर्धा, महाराष्ट्र
मोबाइल नंबर: 7838792010

श्री रजत राज
शोधार्थी, जनसंचार विभाग
झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
रांची, झारखण्ड
मोबाइल नंबर: 9199162656

प्रतियोगिता संयोजक

डॉ. अमृत कुमार
सहायक प्रोफ़ेसर, जनसंचार विभाग,
झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
रांची, झारखण्ड

जानकारी हेतु ssundmc@gmail.com पर भी संपर्क कर सकते हैं।

पोस्टर डिजाइन: श्री कुमार आर्यन, पूर्वछात्र, जनसंचार विभाग